# आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें - इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 543 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 59 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को योग्यतानुसार दो वर्ष का राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) का प्राक्शास्त्री परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी है, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

**उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।**

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

आगामी सत्र 20 जून 2010 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **देवलाली (महा.) में 16 मई से 3 जून, 2010 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

**- देवलाली का पता -**

श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, बेलतगांव
रास्ता, लामरोड़, देवलाली-नासिक (महा.)
फोन : (0253) 2491044

**पण्डित रतनचन्द भारिल्ल**

प्राचार्य, श्री टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
फोन : 0141-2705581, 2707458

# वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 321 अंक : 9


## संत निरंतर चिंतत...

संत निरंतर चिंतत ऐसै, आतमरूप अबाधित ज्ञानी ।।टेक।।
वरणादिक विकार पुदगल के, इनमें नहिं चैतन्य निशानी।
यद्यपि एक क्षेत्र अवगाही, तदपि लक्षण भिन्न पिछानी।।
संत निरंतर चिंतत ...।।1।।
रागादिक तो देहाश्रित हैं, इनतें होत न मेरी हानी।
दहन दहत ज्यों गगन न तद्गत, गगन दहनता की विधि हानी।।
संत निरंतर चिंतत ...।।2।।
मैं सर्वांग पूर्ण ज्ञायक रस, लवणखिल्लवत लीला ठानी।
मिलो निराकुल स्वाद न यावत, तावत पर-परनति हित मानी।।
संत निरंतर चिंतत ...।।3।।
'भागचन्द्र' निरद्वन्द निरामय, मूरति निश्चय सिद्ध समानी।
नित अकलंक अवंक शंक बिन, निर्मल पंक बिना जिमि पानी।।
संत निरंतर चिंतत ...।।4।।

**– कविवर पण्डित भागचन्दजी**

छहढाला प्रवचन

# गृहीत-मिथ्याज्ञान का स्वरूप और उसके त्याग का उपदेश

**एकान्तवाद-दूषित समस्त, विषयादिक-पोषक अप्रशस्त।**
**कपिलादि रचित श्रुत कौ अभ्यास, सो है कुबोध बहु देन त्रास।।१३।।**

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

अब गृहीत मिथ्यादर्शन के साथ गृहीत मिथ्याज्ञान के भी त्याग का उपदेश देते हैं ह्न

यहाँ आत्मा के दुःख के कारण को छोड़ने की चर्चा चल रही है। दुःख का कारण दूसरा कोई नहीं; अपितु जीव का अपना मिथ्याभाव ही है। द्रव्य-गुण-पर्यायस्वरूप वस्तु अनेकान्तरूप है; उसको नहीं जाननेवाले अज्ञानियों द्वारा रचित सभी शास्त्र एकान्तवाद से दूषित हैं, विषय-कषाय के पोषक हैं, अप्रशस्त हैं, अच्छे नहीं हैं, जीव का अहित करनेवाले हैं; अतः वे कुशास्त्र हैं। उनका अभ्यास, उनकी मान्यता, उनको सच्चा समझकर वांचन-श्रवण करना - ये सब कुज्ञान है; गृहीत-मिथ्याज्ञान है और जीव को बहुत त्रास देने वाला है; अतः उनका सेवन छोड़ देना चाहिए।

वीतरागी-सर्वज्ञ अरहन्तदेव द्वारा उपदिष्ट अनेकांतमय वस्तुस्वरूप से विपरीत कहनेवाला दुनियां का कोई भी शास्त्र, चाहे वो कितना ही प्रसिद्ध क्यों न हो और किसी का भी बनाया हुआ क्यों न हो; वह सब कुशास्त्र है।

निगोद से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के अनन्त जीवों में तो शास्त्र पढ़ने योग्य क्षयोपशम ही नहीं है; किन्तु तेरे ज्ञान का विकास होकर तुझे शास्त्र वांचने योग्य बुद्धि मिली है। फिर भी यदि तू विषय-कषाय के पोषक, राग के पोषक, अज्ञान के पोषक कुशास्त्रों में ही अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करेगा तो तेरी यह बुद्धि - दुर्बुद्धि है, मिथ्याबुद्धि है; अतः हे भाई ! वीतरागीदेव के मार्ग में आकर तू अपनी बुद्धि यथार्थ तत्त्व की समझ में लगा, जिससे तेरा कल्याण हो।

अतीन्द्रिय-प्रत्यक्ष-संपूर्ण ज्ञान से जगत् को साक्षात् जाननेवाले सर्वज्ञ भगवान कहते हैं कि जगत् में भिन्न-भिन्न अनन्त जीव हैं; प्रत्येक जीव ज्ञानस्वरूपी है और अपने-अपने अनंत धर्म सहित है। जीव और अजीव - सभी पदार्थों में अपने-अपने स्वाधीन अनन्त गुण-पर्याय हैं, उनका कर्त्ता कोई नहीं है। स्व-पर को जानना जीव का स्वभाव है, जानने से राग नहीं होता; अतएव आत्मा वीतराग-विज्ञान का घन है - ऐसा जानकर अनुभव करे, तब अनादि का अज्ञान मिटकर सम्यग्ज्ञान होता है।

ज्ञान का काम है - जानना। राग या विकल्प करना ज्ञान का काम नहीं है। निर्विकल्प होकर ऐसा ज्ञानस्वभाव अनुभव में लेते ही रागादि परभावों का कर्तृत्व छूट जाता है और वीतरागी आनन्द का अनुभव होता है। ऐसे अनुभव सहित आत्मा को जाने तभी आत्मा की सच्ची पहचान होती है और तभी अगृहीत मिथ्यात्व मिटता है।

अरे ! अज्ञानी के बनाये हुए नास्तिकता के पोषक कुशास्त्रों का जो सेवन करता है, जीव को ईश्वरकृत पराधीनता बतानेवाले शास्त्रों अथवा युद्ध आदि के उपदेशक शास्त्रों का जो सेवन करता है, वह कुज्ञान का सेवन करता है।

जैन के नाम पर रचे गये शास्त्रों में भी जिनमें वीतरागी देव-गुरु-धर्म का स्वरूप विपरीत दिखता हो, जिनमें सर्वज्ञदेव को भी खान-पान की बात कही हो, मुनिराज को भी जहाँ वस्त्रादिसहित कहा गया हो तथा जहाँ सम्यग्दर्शन के बिना ही भव का छेद होना कहा हो - वे सब कुशास्त्र हैं, उनके सेवन से गृहीत मिथ्याज्ञान होता है और वह भयंकर भवदुःख देनेवाला है; इसलिए ऐसे कुशास्त्रों का सेवन छोड़ देना चाहिए; जिनमें देव-गुरु-धर्म का तथा आत्मा के हित का यथार्थ स्वरूप समझाया हो - ऐसे वीतरागी शास्त्रों का सत्यस्वरूप समझकर सम्यग्ज्ञान करना चाहिए; यही परम हित का कारण है।

वीतरागी शास्त्र निजस्वरूप का ऐसा निर्णय कराते हैं कि मैं ज्ञान हूँ, ज्ञान ही मेरा स्वरूप है, ज्ञान ही मेरी क्रिया है। राग-द्वेष को ज्ञान नहीं कहते। जैसे- सूर्य की किरण में अन्धकार नहीं है, वैसे ही ज्ञानसूर्य की किरण में रागद्वेष नहीं है, जैसे केवलज्ञान में राग नहीं है, वैसे ही मति-श्रुतज्ञान में भी राग नहीं है; ज्ञान तो ज्ञान ही है, ज्ञान राग नहीं है। राग को जानते समय भी ज्ञान तो ज्ञान ही है और राग, राग ही है; दोनों भिन्न हैं, एक नहीं हो गये। अहा ! ऐसा भेदज्ञान ही सच्चा ज्ञान है।

मतिश्रुतज्ञान और केवलज्ञान दोनों की जाति एक ही है। यद्यपि मतिश्रुतज्ञान की सामर्थ्य अल्प है, वह अल्पकाल रहता है और अल्प ही जानता है; और केवलज्ञान की शक्ति अनन्त-अपार है, वह अनन्तकाल तक रहता है और सर्व को जानता है; तथापि इतना अन्तर होते हुए भी दोनों ज्ञान जाननस्वरूपी चेतनामय ही हैं। इनमें अधूरा और पूरा - ऐसा भेद भले ही हो; किन्तु स्वरूप में भेद नहीं है। एक ज्ञान रागसहित और दूसरा रागरहित - ऐसे अलग-अलग दो जाति के ज्ञान नहीं हैं; सभी प्रकार के ज्ञान रागरहित ही हैं, राग से भिन्न ही हैं; चाहे मतिज्ञान हो या केवलज्ञान - किसी में भी राग प्रवेश नहीं कर सकता। राग तो ज्ञान से बाहर ही रहता है। भाई ! तेरे ज्ञान का ऐसा निर्णय तो कर !

जो ऐसे ज्ञानस्वरूप को दिखावे, वही शास्त्र सच्चा है। जिसने ऐसे ज्ञानस्वरूप को अनुभव में लिया, उसी का शास्त्रज्ञान सच्चा है। पर से भिन्न अपने ज्ञानस्वभाव का अनुभव करना ही सत्शास्त्रों का रहस्य है। सभी शास्त्रों का निचोड़, सभी शास्त्रों का रहस्य ज्ञानस्वरूप के अनुभव में ही समा जाता है, इसी को 'ज्ञानचेतना' कहते हैं। इसी से अनादि का अज्ञान नष्ट होता है। इससे विपरीत माननेवाले के अन्तर में सुशास्त्र के रहस्य का परिणमन नहीं होता। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

# निज आत्मा ही उपादेय है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 38 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

**जीवादिबहित्तच्चं हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा।**
**कम्मोपाधिसमुब्भवगुणपज्जाएहिं वदिरित्तो ।।३८।।**

( हरिगीत )

**जीवादि जो बहितत्त्व हैं, वे हेय हैं कर्मोपधिज।**
**पर्याय से निरपेक्ष आतमराम ही आदेय है।।३८।।**

जीवादि बाह्यतत्त्व हेय हैं; कर्मोपाधिजनित गुणपर्यायों से निरपेक्ष आत्मा ही आत्मा को उपादेय है।

**(गतांक से आगे...)**

**शुद्धकारणपरमात्मा औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक तथा क्षायिकभाव से अगोचर है।**

कारणपरमात्मा ही वास्तव में आत्मा है। मुनि तथा धर्मी जीव को आत्मा ही उपादेय है। सातत्त्वों का रागसहित विचार करना वास्तव में उपादेय नहीं है। सम्यग्दर्शन का ध्येय तो कारणपरमात्मा-शुद्ध आत्मा ही है और वही मुनि को उपादेय है।

आत्मा किसे कहते हैं ? यह बात अब स्पष्ट की जाती है।

**जो औदयिक आदि चार भावान्तरों से अगोचर है - ऐसा कारणपरमात्मा ही वास्तव में आत्मा है।**

आत्मा में धर्मदशा किस भाव के आश्रय से होती है ? इसे विस्तार से बताते हैं।

चिदानंद एकरूप शुद्ध परमपारिणामिक स्वभाववाला आत्मा है, उसी के आश्रय से धर्मदशा प्रकट होती है। औदयिकादिक चार भाव तो परमपारिणामिक भाव से अन्य हैं; अतः इन चारों को भावान्तर कहा है और ये चारों भाव परमपारिणामिकभाव नहीं हैं; इसलिये इन चारों की अपेक्षा से परमपारिणामिकभाव को भी भावान्तर कहा जाता है। इसप्रकार अपेक्षाकृत यह दोनों ही परस्पर में भावान्तर हैं - ऐसा समझना।

**(१) औदयिकभाव -** दया-दानादि के भाव, हिंसा-असत्यादि के भाव, सच्चे देव-गुरु-शास्त्र की भक्ति के भाव, पंच महाव्रत या बारह व्रत के विकल्प, स्वाध्याय, पूजा, भक्ति

आदि के भाव औदयिक भाव हैं। इन भावों से विकार का अनुभव होता है; परन्तु आत्मा का अनुभव नहीं होता। जिस भाव से तीर्थंकर नामकर्म बंधता है अथवा स्वर्गादि के भव मिलते हैं, वे सब शुभभाव हैं, औदयिकभाव हैं। शुभ परिणाम से बंध होता है; धर्म नहीं होता; इसलिये औदयिकभाव से आत्मा अगोचर है।

**(२) औपशमिकभाव –** औपशमिकभाव आत्मा की निर्मल पर्याय है, वह कर्म के उपशम की अपेक्षा रखती है। पहले उपशम सम्यग्दर्शन होता है, जो शुद्धस्वभाव के लक्ष्य से होता है। उपशम सम्यग्दर्शन होने के बाद भी उसके आधार से सम्यक्त्व वृद्धिंगत नहीं होता तथा चारित्र भी नहीं होता। उपशमभाव वीतरागी परिणाम होने पर भी है तो पर्याय ही। पर्याय के लक्ष्य से तो राग की उत्पत्ति होती है, उससे अभेद होकर आगे नहीं बढ़ा जा सकता; क्योंकि निर्मलपर्याय के आश्रय से निर्मलपर्याय नहीं होती। उपशम सम्यक्त्व के आधार से उपशम चारित्र अथवा दूसरा चारित्र प्रगट नहीं होता। उपशम सम्यक्त्व अथवा उपशम चारित्र का आधार तो परमपारिणामिकभाव है। उपशमभाव तो स्वयं पर्याय है; अतः उसके लक्ष्य से राग की उत्पत्ति होती है। इसी अपेक्षा से यहाँ उपशमभाव से आत्मा अगोचर है – ऐसा कहा।

**(३) क्षायोपशमिकभाव –** धर्मी की क्षयोपशमभावरूप आत्मा की निर्मलपर्याय है; परन्तु उसमें निर्मलता के साथ कुछ मलिनभाव भी है। उसका आश्रय करने से सम्यग्दर्शन नहीं होता, चारित्र भी नहीं होता तथा नहीं बढता; क्योंकि वह स्वयं अवस्था है और अवस्था में से अवस्था नहीं होती। शुद्धभाव के आधार से ही सम्यग्दर्शन और चारित्र होता है। क्षयोपशमभाव के लक्ष्य से विकल्प उठता है, धर्म नहीं होता; अतः उससे भी आत्मा अगोचर कहा।

**(४) क्षायिकभाव –** क्षायिकसम्यक्त्व, क्षायिकचारित्र, क्षायिकज्ञान, क्षायिकवीर्य आदि क्षायिकभाव हैं। क्षायिकभाव से आत्मा अगोचर है। चतुर्थ गुणस्थान में किसी-किसी सम्यक्त्वी जीव को क्षायिक सम्यक्त्व होता है; परन्तु क्षायिक सम्यक्त्व के आधार से चारित्र प्रकट नहीं होता; क्योंकि वह पर्याय है। पर्याय के लक्ष्य से राग उत्पन्न होता है, अभेद में स्थिरता नहीं होती। बारहवें गुणस्थान में क्षायिकचारित्र है; किन्तु उस क्षायिकचारित्र की पर्याय के आश्रय से आगे बढ़ना नहीं होता। तेरहवें गुणस्थान में केवलज्ञान (क्षायिकज्ञान) है। साधक जीव को वर्तमान में केवलज्ञान प्रकट नहीं है और जो प्रकट नहीं है, उसका विचार करने पर राग होता है, अभेद स्वभाव में लीनता नहीं हो पाती। केवलज्ञान होने के पश्चात् भी केवलज्ञानपर्याय में से केवलज्ञानपर्याय प्रकट नहीं होती; क्योंकि केवलज्ञान अंश है और अंश में से अंश नहीं आता; अपितु अंशी जैसा शुद्धस्वभाव ही सभी निर्मलपर्यायों का आधार है। केवलज्ञान, केवलदर्शन, अनन्तवीर्य, अनन्तसुख ह्न ये अनन्तचतुष्टय सादि-अनन्तकाल तक रहते हैं, उनका आधार शुद्धचैतन्यस्वभाव है; क्षायिकभाव की पर्याय उनका आधार नहीं है। क्षायिकभाव वीतरागीपर्याय है; तथापि जिसप्रकार पर्याय में से पर्याय नहीं आती; उसीप्रकार वर्तमान में अप्रकट क्षायिकभाव का विचार करने पर विकल्प उठता है। इस अपेक्षा से

क्षायिकभाव से आत्मा अगोचर है - ऐसा कहा।

**इसप्रकार औदयिकादि चार भावों के आश्रय से धर्म नहीं होता।**

देव-गुरु-शास्त्र के निमित्त से, शरीर से अथवा कर्म के मन्दोदय से तो धर्म होता ही नहीं; दया-दानादि के शुभभावरूप औदयिक भाव से भी धर्म नहीं होता। उपशम, क्षयोपशम एवं क्षायिकभाव यद्यपि वीतरागी पर्यायें हैं, तथापि उनके आधार से धर्म नहीं होता; क्योंकि वे सब स्वयं पर्यायें हैं और पर्याय में से पर्याय नहीं आती। धर्म तो त्रिकाली परमपारिणामिक स्वभावभाव के आश्रय से ही होता है। चार भावों के आश्रय से धर्म नहीं होता। त्रिकाल की अपेक्षा से एकसमय की पर्याय को भिन्न कहा है। सामान्य की अपेक्षा से विशेषभाव भिन्न है और विशेष की अपेक्षा से सामान्य भी भिन्न है, अन्य है। परमपारिणामिकभाव की अपेक्षा से चार भाव अन्य हैं और चार भावों की अपेक्षा से परमपारिणामिकभाव अन्य है; अतः अन्य भावों के आश्रय से धर्म नहीं होता; किन्तु **एकरूप पारिणामिकभाव के आश्रय से ही धर्म होता है।**

यहाँ मुनिराज ने बहुत स्पष्ट बात की है। शरीर, मन, वाणी तो पर हैं ही; देव-गुरु-शास्त्र भी पर हैं, औदयिकादिभाव भी पर्यायें होने से परद्रव्य हैं। निमित्त, शुभभाव अथवा एक समय की पर्याय ह्न वीतरागता की खान नहीं है। वीतरागता की खान तो परमपारिणामिक एकरूप स्वभावभाव ही है। उसी के आश्रय से सम्यक्त्व, चारित्र, शुक्लध्यान, केवलज्ञान, वीतरागी आनन्द, अनन्तवीर्यादि प्रकट होते हैं। **(क्रमशः)**

---

**(पृष्ठ 15 का शेष ...)** श्री नेमीचंदजी अजमेरा **(जैन समिति)**, श्री पवनजी जैन **(महासमिति)**, श्री उमेशजी अजमेरा **(दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप)**, श्री महेशजी जैन **(महावीर हैल्प लाईन)**, **बूंदी** से श्री मदनलालजी जैन, **तालेड़ा** से श्री महावीरजी हरसौरा, **जयस्थल** से पं.धर्मचन्दजी, **केशवरायपाटन** से श्री प्रेमचंदजी, **पिड़ावा** से श्री कमलजी, **सरावगी समाज** से श्री नाथूलालजी गोधा, **नसियांजी** से श्री राजमलजी सर्राफ, **फैडरेशन कोटा संभाग** से श्री तेजमलजी पटवारी, श्री सतीशजी जैन, पं.जयकुमारजी, श्री बालचंदजी, श्री घासीलालजी जैन, श्री विनोदजी सेठिया, श्री ललितजी जैन, श्री विक्रांतजी सेठिया, श्री अखिलेशजी जैन, श्री भानूजी पाटनी, श्री शेलेन्द्रजी चांदवाड़, श्री लाभचंदजी जैन, पण्डित निकलंकजी शास्त्री, **बांसवाड़ा विद्यालय परिवार** से पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित अमितजी शास्त्री, **आचार्य धरसेन सिद्धांत विद्यालय परिवार** से पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित विजयजी शास्त्री, पण्डित केवलचंदजी, श्रीमती श्वेता जैन आदि ने डॉ. भारिल्ल का स्वागत व अभिनन्दन किया।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का भी अनेक महिला संगठनों ने स्वागत किया।

कार्यक्रम में अनेक मुमुक्षु मण्डलों एवं मुमुक्षु संस्थानों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बूंदी, तालेड़ा, जयस्थल, नोताड़ा, मंडाना, बारा, केशवरायपाटन, बिजौलिया, पिड़ावा, रावतभाटा, लाखेरी, सांगोद, काप्रेन, भवानीमण्डी, डाबी आदि अनेक स्थानों से लोग पधारे। डॉ. भारिल्ल ने अकलंक शोध संस्थान से प्रकाशित **श्री पुराणम्** नामक ग्रंथ का विमोचन भी किया। ●

(4)

**( शेष पृष्ठ 27 पर ...)**

# ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

**प्रश्न :** स्वानुभव मनजनित है या अतीन्द्रिय है ?

**उत्तर :** वास्तव में स्वानुभव में मन और इन्द्रियों का अवलम्बन नहीं है, इसलिये वह अतीन्द्रिय है; परन्तु स्वानुभव के समय मति-श्रुतज्ञान विद्यमान है और वह मति-श्रुतज्ञान मन अथवा इन्द्रियों के अवलम्बन बिना होता नहीं, इस अपेक्षा से स्वानुभव में मन का अवलम्बन भी कहा गया है। वास्तव में जितना मन का अवलम्बन टूटा, उतना ही स्वानुभव है- स्वानुभव में ज्ञान अतीन्द्रिय है।

**प्रश्न :** अनुभव द्रव्य का है या पर्याय का ?

**उत्तर :** अनुभव में अकेला द्रव्य या अकेली पर्याय नहीं है; किन्तु स्वसन्मुख झुकी हुई पर्याय द्रव्य के साथ तद्रूप हुई है; अत: द्रव्य-पर्याय के बीच में भेद नहीं रहा; ऐसी जो दोनों की अभेद अनुभूति- वह अनुभव है। द्रव्य और पर्याय के बीच में भेद रहे, तब तक निर्विकल्प अनुभव नहीं होता।

**प्रश्न :** जिससमय त्रिकाली द्रव्य के आश्रय से निर्विकल्प आनन्द की अनुभूति होती है, उसीसमय मैं आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ-ऐसा विचार आता है क्या ?

**उत्तर :** निर्विकल्प अनुभूति के काल में आनन्द का वेदन है; किन्तु विकल्प नहीं है। जब निर्विकल्प से विकल्प में आता है, तब ध्यान में आता है कि आनन्द का अनुभव हुआ था; परन्तु आनन्द के अनुभवकाल मैं 'आनन्दानुभव करता हूँ'- ऐसा भेद नहीं है, वेदन है।

**प्रश्न :** जिसप्रकार आम का स्वाद आत्मा को आता है; उसीप्रकार आत्मा के अनुभव का स्वाद कैसा होता है ?

**उत्तर :** आम तो जड़ है; अत: उस जड़ का स्वाद आत्मा को आता नहीं। आम के मीठे रस का ज्ञान होता है और आम अच्छा है- ऐसी ममता के राग का दु:खरूप स्वाद आत्मा को आता है। आत्मा के अनुभव का जो अतीन्द्रिय आनन्द आता है, वह वचन अगोचर है; अनुभवगम्य है।

समाचार दर्शन -

# गुरुदेवश्री के प्रवचनों की डी.वी.डी. का विमोचन

**जयपुर (राज.) :** आध्यात्मिक सत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के उपलब्ध संपूर्ण प्रवचनों (लगभग 9000) को श्री शांतिलाल रतिलाल शाह परिवार, मुम्बई के सहयोग से श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा आधुनिक तकनीक से मात्र 16 डी.वी.डी. में रूपान्तरित किया गया है।

16 डी.वी.डी. के इस सैट का विमोचन दिनाँक 10 मार्च को श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के करकमलों से हुआ साथ ही गुरुदेवश्री द्वारा हिन्दी में किये गये प्रवचनों की 7 डी.वी.डी का विमोचन ब्र.यशपालजी जैन ने किया।

इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया अलीगढ, पण्डित देवेन्द्रजी जैन बिजौलिया, श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई आदि मंचासीन थे।

अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। गुरुदेवश्री के प्रवचनों की डी.वी.डी. का परिचय पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया ने दिया।

विमोचन के पश्चात् **श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई ने अपने वक्तव्य में कहा कि** मैं कई बार तीन बातों के बारे में विचार करता हूँ। **पहली बात** तो यह कि यदि **गुरुदेवश्री न होते** तो हमें तत्त्व का इतना सूक्ष्म विवेचन कैसे जानने को मिलता ? **दूसरी बात** यह कि गुरुदेवश्री तो हुये, उनके द्वारा सूक्ष्म तत्त्व का विवेचन भी हुआ; पर यदि **श्री नवनीतभाई द्वारा उनके प्रवचनों को रिकॉर्ड नहीं किया गया** होता तो क्या होता ? शायद वह सूक्ष्म चर्चा उन्हीं के साथ चले जाती; किन्तु ऐसा नहीं हुआ। गुरुदेवश्री की वाणी आज प्रवचनों के माध्यम से हमारे पास सुरक्षित है।

हमारा इतना सौभाग्य होने पर भी मैं **तीसरी बात** और विचारता हूँ कि यह सब तो ठीक पर यदि इन प्रवचनों को सुनकर, समझकर, आत्मसात कर **जन-जन तक पहुँचाने के कार्य में संलग्न इस जीवंत टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थी/विद्वान न होते, यदि यह महाविद्यालय नहीं होता तो इस तत्त्वज्ञान को कौन आगे पहुँचाता ? मुझे तो ऐसा लगता है कि इस महाविद्यालय के ही निमित्त से यह वीतरागी तत्त्वज्ञान पंचमकाल के अंत तक सुरक्षित रह सकेगा तथा भविष्य में कई गुणा होकर फैलेगा।**

महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं ब्र. यशपालजी जैन ने गुरुदेवश्री द्वारा प्रदत्त तत्त्वज्ञान की महिमा बताई; साथ ही कहा कि अभी वर्तमान काल तत्त्वप्रचार के लिये अत्यन्त अनुकूल है। अनंतभाई ने जो कार्य किया है, वह वास्तव में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इन डी.वी.डी के माध्यम से यह तत्त्व पंचमकाल के अंत तक रहेगा।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

## विदाई एवं दीक्षांत समारोह सम्पन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 26 फरवरी को श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर त्रिमूर्ति जिनमंदिर में प्रात: जिनेन्द्र पूजन का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुशीलजी गोदीका जयपुर, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर, डॉ. अर्कनाथ चौधरी (प्राचार्य-राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर), डॉ. राजधरजी मिश्र (प्रो.-जगद्गुरु रामानंदाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय), ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित शांतिजी पाटील, पण्डित संजीवजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, डॉ. मनीषजी खतौली, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री एवं पण्डित संतोषजी शास्त्री मंचासीन थे।

सभा में विद्यार्थियों ने विचार व्यक्त करते हुये स्मारक को आत्मा का इंजीनियर बनाने की प्रयोगशाला कहा एवं स्मारक के पंचवर्षीय अध्ययन काल को स्वर्ग-सुख की उपमा दी। अंत में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में धार्मिक शिक्षा को लौकिक शिक्षा से श्रेष्ठ व अतुलनीय बताया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के करकमलों से शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को **'सिद्धांत शास्त्री'** की उपाधि प्रदान की गई।

कार्यक्रम के अंत में महाविद्यालय की अन्य गतिविधियों के अन्तर्गत चिकित्सा विभाग में विशेष सहयोग देने हेतु विशिष्ट विद्यार्थी के रूप में सौरभ शास्त्री अमरमऊ को सम्मानित किया।

मंङ्गलाचरण एकत्व खनियांधाना एवं संचालन वीरेन्द्र बकस्वाहा, विकास इन्दौर, विवेक मड़देवरा, पंकज हिंगोली एवं मुक्ति जैन ने किया।

## चन्देरी में डॉ. भारिल्ल का सम्मान

**चन्देरी (म.प्र.) :** यहाँ दिनाँक 16 फरवरी को अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्योगपति श्री कृष्णजी सोमानी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय विधायक श्री राजकुमार सिंह महुअन एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर, एडवोकेट श्री मथुराप्रसादजी मड़वैया गुना, श्री गेंदालालजी पुजारी एवं श्री सुनीलजी सरल खनियांधाना तथा श्री अशोकजी जैन (ट्रस्टी एवं मंत्री - जैन पंचायत) उज्जैन उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री अमोलकचंदजी कठरया ने डॉ. भारिल्ल का परिचय दिया तथा श्री गेंदालालजी सर्राफ द्वारा अभिनंदन-पत्र का वाचन कर उन्हें भेंट किया गया। चन्देरी जैन समाज की ओर से अध्यक्ष श्री आनंदकुमारजी रोकड़िया, चौबीसी जैन मंदिर ट्रस्ट की ओर से महामंत्री श्री निर्मलकुमारजी कठरया तथा श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर की ओर से अध्यक्ष श्री चौधरी विनयकुमारजी बजाज ने माल्यार्पण, तिलक, श्रीफल एवं शॉल भेंट कर डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनंदन किया।

संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने तथा मंगलाचरण कुमारी परिणति पाटील ने किया।

## वेदी प्रतिष्ठा एवं शिलान्यास संपन्न

**चन्देरी (म.प्र.) :** यहाँ दिनाँक 15 से 17 फरवरी तक तीर्थङ्कर ऋषभदेव सर्वोदय फाउंडेशन न्यास द्वारा वेदी प्रतिष्ठा एवं शिलान्यास सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** के अत्यंत सरल भाषा में आत्मा की खोज, आत्मा-परमात्मा, णमोकार महामंत्र आदि विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुए। साथ ही पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन टीकमगढ व पण्डित सतीशचंदजी जैन पिपरई के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

दिनाँक 14 फरवरी को हिरावल के जैन परिवारों द्वारा हिरावल ग्राम के जिनमंदिर में शांति विधान हुआ। 15 फरवरी को प्रात: हिरावल के जिनमंदिर से निष्ठापन विधिपूर्वक भगवान पार्श्वनाथ आदि तीर्थङ्करों के 7 जिनबिम्ब शोभायात्रासहित चौबीसी मंदिर धर्मशाला के प्रांगण में विराजमान किये गये। 15 से 17 फरवरी तक याग मण्डल विधान हुआ। विधान के आयोजनकर्त्ता श्री महेन्द्रकुमार, अखिल, अनिल, अजित, अरुण, अतुल बंसल थे। ध्वजारोहण श्री कपूरचंद जिनेन्द्रकुमार जैन परिवार ने किया तथा मंगल कलश स्थापनकर्त्ता श्री प्रसन्नकुमार पदमकुमार हाटकापुरा, श्री सुरेशचंद राजीवकुमार सिंघाड़ेवाले, श्री रमेशचंद नीकेशकुमार गोयल तथा श्री बाबूलाल सुरेशचंद पिपरई थे।

17 फरवरी को शोभायात्रा के माध्यम से हिरावल ग्राम के समवशरण को तीर्थधाम आदीश्वरम् परिसर में लाकर विधिवत् वेदी प्रतिष्ठापूर्वक नवनिर्मित वेदी में श्रीजी विराजमान किये गये।

भगवान ऋषभदेव समवशरण जिन मंदिर की शिलान्यास विधि श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर के ट्रस्टी श्री मुकेशजी जैन, श्री आनंदकुमारजी पाटनी एवं श्री चांदमलजी संघवी इंदौर के करकमलों से सम्पन्न हुई। स्वाध्याय भवन का शिलान्यास दातार के अनुरोध पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल परिवार द्वारा किया गया।

कार्यक्रम सफल बनाने में चौबीसी जैन मंदिर प्रबंध समिति एवं खन्दार सेवा दल का सहयोग सराहनीय रहा। स्मरण रहे कि मंदिर निर्माण हेतु श्री महेन्द्रकुमार अजितकुमार बंसल ने भूमि प्रदान की है तथा अखिल बंसल सभी के सहयोग से निर्माण कार्य हेतु कृत संकल्पित हैं।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित राजेन्द्रजी टीकमगढ, पण्डित सतीशचंदजी जैन पिपरई, पण्डित सचिनजी मोदी, पण्डित एकत्वजी शास्त्री एवं पण्डित समकितजी शास्त्री ने संपन्न कराये।

## ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

**कुंथलगिरि (महा.) :** यहाँ दिनाँक 13 से 15 फरवरी तक तीन समय 2-2 घंटे **मोक्षमार्गप्रकाशक** के आधार से तत्त्वचर्चा हुई। इस कार्यक्रम में एम. जी. विद्यामंदिर बाहुबली से 1958 में मैट्रिक पास करने वाले ब्र. यशपालजी के बैच के सभी विद्यार्थी उपस्थित थे।

इस अवसर पर पण्डित रामकुमारजी आनंद सोलापुर के प्रवचन का भी लाभ मिला।

आपने **छिंदवाड़ा** में दिनाँक 20 जनवरी से 7 फरवरी तक **भावदीपिका की चूलिका अधिकार** पर प्रवचन और **नागपुर** में दो दिन महावीर विद्या निकेतन के छात्रों को मार्गदर्शन दिया।

**औरंगाबाद** में भी आपके दो दिन तक **मोक्षमार्ग की पूर्णता** पर प्रवचन हुये।

# ललितपुर व देवगढ में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती

**ललितपुर (उ.प्र.) :** यहाँ 19 से 21 फरवरी तक श्री दि. जैन स्वाध्याय मण्डल के तत्त्वावधान में **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्री 1008 दि. जैन नया मंदिर में प्रात: एवं रात्रि को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में पण्डित रमेशचंदजी मंगल सोनगढ के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये।

दिनांक 20 फरवरी को सायं कटरा बाजार में बने विशाल पंडाल में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् डॉ. भारिल्ल हीरक जयन्ती सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर भारिल्ल द्वय एवं उनकी श्रीमती के अतिरिक्त पण्डित भानुकुमारजी जैन, पण्डित रमेशजी मंगल, पण्डित ऋषभजी जैन, पण्डित गोकुलचंदजी सरोज, श्री दि.जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री अजितकुमारजी खजुरिया, उपाध्यक्ष श्री जिनेन्द्र कामरेड, कोषाध्यक्ष श्री सुनीलजी कौशल, वरिष्ठ पत्रकार श्री ज्ञानचंदजी अलया, तारण समाज के अध्यक्ष श्री शीलचंदजी समैया, सेरोनजी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री हीरालालजी खजुरिया, संरक्षक श्री गुलाबचंदजी लागौन आदि मंचासीन थे।

स्वागत गीत कु. श्रद्धा नायक एवं शुचि नायक ने प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् मंचासीन एवं सभा में उपस्थित अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों, प्रतिनिधियों, सदस्यों तथा शताधिक गणमान्य व्यक्तियों ने **डॉ. भारिल्ल** का माला, तिलक, शॉल तथा श्रीफल से सम्मान किया।

सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों ने मिलकर अभिनंदन-पत्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट किये। अभिनंदन-पत्र का वांचन जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री अजितजी खजुरिया ने किया।

स्वागत/सम्मान के पूर्व डॉ. कमलश्री नायक ने डॉ. भारिल्ल का जीवन परिचय देते हुये उनकी प्रारंभ से लेकर डी. लिट् की उपाधि तक की जानकारी दी तथा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के संपर्क में आने के बाद से उनके जीवन परिवर्तन का इतिहास बताया।

डॉ. भारिल्ल का सम्मान करनेवालों में मुख्यरूप से आई. एम. ए. अध्यक्ष डॉ. निर्मलचंद्रजी जैन, नीमा अध्यक्ष डॉ. अमरचंदजी जैन, आचार्य विद्यासागर साधर्मी विकास न्यास अध्यक्ष डॉ. महेन्द्रकुमारजी जैन, बाबू जीवनलालजी जैन एड., बाबू जयकुमारजी चौधरी एड., बाबू शादीलालजी जैन एड., चांदपुर जहाजपुर क्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुमतजी सर्राफ, जैन मिलन अध्यक्ष डॉ. अक्षयजी टडैया, व्यापार मंडल प्रदेश मंत्री श्री महेन्द्रजी जैन, मयूर दयोदय गौशाला ललितपुर अध्यक्ष श्री सतीशजी नजा, देवगढ क्षेत्र कमेटी अध्यक्ष श्री चम्पालालजी नोर, विश्व हिन्दू परिषद के श्री रामगोपालजी नामदेव, श्री स्वाध्याय मंडल अध्यक्ष श्री मुन्नालालजी सैदपुर, कोषाध्यक्ष श्री हुकमचंदजी कौशल, उपमंत्री श्री पवनजी पारौल, ऑडीटर श्री शिखरजी अनौरा, संरक्षक श्री कोमलचंदजी बानोनी, प्रतिनिधि संतोषजी जैन, कंची मोदी, श्री कैलाशजी सतभैया, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के अध्यक्ष श्री राकेशजी अनौरा, मंत्री श्री सुशांतजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री अनुरागजी बनौनी, पाठशाला अध्यक्ष श्री प्रकाशजी जैन रडिया, मंत्री श्री बाहुबलीजी खजुरिया आदि की उपस्थिति रही।

इनके अतिरिक्त जैन समाज के अन्य गणमान्य श्री चन्द्रकुमारजी गुडा, श्री महेन्द्र सुनीता, श्री

महेन्द्रजी चौधरी, श्री सुमेरजी चौधरी, श्री चम्पालाल कमलेशकुमारजी लागौनवाले, श्री अनिलजी जैन विदिशा, श्री बाबूलालजी दिवाकर, श्री करतारचंदजी, श्री सतीशचंदजी, श्री पवनकुमारजी सैदपुरवाले, श्री प्रेमचंदजी नायक, श्री संजीवजी नायक, श्री कैलाशचंदजी बानपुर आदि जैन समाज व अन्य समाज की अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने मांगलिक उद्बोधन में कहा कि ये सम्मान मेरा सम्मान नहीं; अपितु जिनवाणी माता का सम्मान है, पूज्य गुरुदेवश्री का सम्मान है।

इसी प्रसंग पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं उनके लघु भ्राता डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल का भी अनेक लोगों ने सम्मान किया। श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल का स्वागत डॉ. कमलश्री नायक, श्रीमती सुनीता पारोल रत्नप्रभा एड., श्रीमती सरला सैदपुर, श्रीमती हेम चौधरी, श्रीमती चंदा टडैया, श्रीमती सुधा जैन, श्रीमती सोनम जैन, श्रीमती सरला गुढा, श्रीमती मीना इमलया आदि अनेक महिलाओं ने किया।

संचालन स्वाध्याय मण्डल के प्रतिनिधि एवं पूर्व महामंत्री बाबू सुरेशजी एड. ने किया।

**2. देवगढ (म.प्र.) :** यहाँ दिनाँक 21 फरवरी को **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर देवगढ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सेठ चम्पालालजी जैन (नोहरकलां), उपाध्यक्ष श्री गोकुलचंदजी 'सरोज', महामंत्री बाबू मुरारीलालजी एडवोकेट, मंत्री श्री महेन्द्रजी 'सुनीता', वयोवृद्ध पण्डित मुन्नालालजी प्रतिष्ठाचार्य एवं पण्डित उत्तमचंदजी 'राकेश' द्वारा तिलक, माल्यार्पण, श्रीफल एवं शॉल द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। प्रतीक के रूप में देवगढ की विश्वप्रसिद्ध उपाध्याय परमेष्ठी प्रतिमा की फोटो एवं अभिनंदन-पत्र भेंट किये गये।

इस प्रसंग पर पण्डित मुन्नालालजी प्रतिष्ठाचार्य एवं पण्डित उत्तमचंदजी ने डॉ. भारिल्ल की विलक्षण तार्किक बुद्धि एवं निर्भीकता की प्रशंसा करते हुये कहा कि हम बचपन में ही समझ गये थे कि डॉ. भारिल्ल बहुत बड़े विद्वान बनेंगे। इसके पश्चात् पण्डित मुन्नालालजी एवं पण्डित गोकुलचंदजी ने डॉ. भारिल्ल पर स्वरचित कविता पाठ किया, जिसमें उनकी शीघ्र ही निर्ग्रन्थ अवस्था प्राप्ति की भावना भायी।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि बुन्देलखण्ड की यह धरा अत्यंत पवित्र है। यहाँ मुनिराजों की साधना निर्विघ्नरूप से पलती है। यहाँ देवगढ में भारत के अन्य तीर्थों की अपेक्षा सर्वाधिक प्रतिमाएँ हैं; अत: यह क्षेत्र और भी अधिक पवित्र है।

कार्यक्रम का संचालन श्री सतीशजी नजा (अध्यक्ष-दयोदय गौशाला) ने किया।

## हार्दिक आमंत्रण...

44 वाँ शिक्षण प्रशिक्षण शिविर दिनांक **16 मई से 2 जून,2010** तक इस वर्ष **देवलाली-नासिक (महा.)** में आयोजित होने जा रहा है। सभी साधर्मी बन्धुओं को पधारकर धर्म लाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है। श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय की प्रवेश प्रक्रिया भी इसी दौरान सम्पन्न होगी। इच्छुक छात्र आवेदन फार्म जयपुर कार्यालय से मंगाकर भरकर भेजें एवं देवलाली पहुँचे।

आवास की व्यवस्था हेतु अपने पहुँचने की पूर्व सूचना 1 मई तक जयपुर कार्यालय में अवश्य भेजें।

# वेदी शिलान्यास एवं हीरक जयंती समारोह संपन्न

**1. घुवारा (म.प्र.) :** यहाँ दिनाँक 21 से 23 फरवरी, 2010 तक सकल दि. जैन समाज द्वारा निर्माणाधीन श्री महावीरस्वामी दि. जैन मंदिर की वेदी शिलान्यास के अवसर पर भगवान महावीर पंचकल्याणक विधान एवं तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के अहिंसा एवं णमोकार महामंत्र : एक अनुशीलन विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित राजकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाड़ा के भी प्रवचन हुये।

दिनांक 23 फरवरी को आयोजित हीरक जयन्ती समारोह की अध्यक्षता सिद्धक्षेत्र नैनागिरि के महामंत्री श्री दामोदरजी सेठ शाहगढ ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री आनंदकुमारजी पाटनी इन्दौर, श्री चांदमलजी संघवी इंदौर, पण्डित बाबूलालजी कारीतोरन, पण्डित बाबूलालजी शास्त्री बड़ामलहरा एवं श्री कमलकुमारजी डेवड़िया शाहगढ मंचासीन थे।

इस अवसर पर श्री चंद्रभानजी जैन ने कहा कि डॉ. भारिल्ल बुन्देलखण्ड के एक दैदीप्यमान नक्षत्र हैं, जिसका प्रकाश सम्पूर्ण विश्व में फैल रहा है। चौधरी शीलचंदजी जैन ने काव्यमय अभिनन्दन-पत्र प्रस्तुत किया। प्रो. शीलचंदजी जैन छिंदवाड़ा ने समाज की ओर से प्रदत्त अभिनन्दन-पत्र का वाचन किया। इस अवसर पर डॉ. उमा सोनी प्राचार्य एवं डॉ. अरुणजी जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किये। मस्तांई प्रेमचंदजी जैन, श्री बाबूलालजी पनवारी-उपाध्यक्ष सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, चौधरी भागचंदजी जैन घुवारा, सिंघई शीलचंदजी वारववालों ने तिलक, शॉल व माल्यार्पण तथा श्री निर्मलजी सिंघई, मा. राजारामजी, श्री पदमचंदजी जैन वारववालों ने पगड़ी पहनाकर स्वागत किया।

इनके अतिरिक्त **मुमुक्षु मण्डल शाहगढ** की ओर से श्री विनोदकुमारजी डेवड़िया एवं श्री मुन्नालालजी जैन, **अमरमऊ मुमुक्षु मण्डल** की ओर से श्री दयाचंदजी जैन, **बकस्वाहा** की ओर से पण्डित लल्लनप्रसादजी व श्री जमुनाप्रसादजी, **भगुवां से** श्री मोतीलालजी जैन एवं श्री संतोषजी जैन, **बड़ागांव** से श्री लखनजी सिंघई, पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी एवं मा. प्रेमचंदजी, **लार** से श्री बाबूलालजी जैन, **वमनोरा** से डॉ. दीपचंदजी जैन, **रामटोरिया** से श्री बालचंदजी, **खरगापुर** से श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन आदि अनेक स्थानों से पधारे महानुभावों ने सम्मान किया।

घुवारा स्थित **बड़ा मंदिर समिति** से श्री दीपचंदजी शाह एवं श्री वीरेन्द्रजी वैद, **नया मंदिर समिति** से पटु. संतोषकुमारजी, **बाजार मंदिर समिति** के अध्यक्ष श्री उदयचंदजी सेठ, **भोंयरा मंदिर समिति** से श्री धनीरामजी व श्री कोमलचंदजी, **मुनिसेवा संघ** से श्री संजयजी जबलपुरी, **फैडरेशन घुवारा** से श्री प्रमोदजी मस्तांई, श्री प्रमोदजी जैन वारव, श्री आलोकजी दाऊ पार्षद, श्री अशोकजी जैन रायपुर, श्री देवेन्द्रजी चौधरी, श्री उत्तमचंदजी सिमरिया, श्री संतोषजी पाटन आदि महानुभावों ने डॉ. भारिल्ल का माल्यार्पण आदि से सम्मान किया। साथ ही विभिन्न महिला मण्डलों की ओर से श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने पाठशाला के स्वयंसेवी अध्यापक श्री प्रमोदजी जैन एवं श्री अरविन्दजी जैन का स्वागत किया साथ ही पाठशाला में प्रविष्ट छात्रों को साहित्य भेंट किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा ने किया। वेदी का शिलान्यास श्रीमती खिमाबाई व उनके सुपुत्र विमलकुमारजी, अजितकुमारजी वारीवालों ने किया।

इसी अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर द्वारा डॉ. भारिल्ल हीरक जयन्ती वर्ष में संस्थापित वीतराग-विज्ञान पाठशाला भवन का शिलान्यास ट्रस्ट के कार्याध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इंदौर के करकमलों से संपन्न हुआ।

**2. केलवाड़ा-झालावाड़ (राज.) :** यहाँ दिनाँक 21 से 28 फरवरी तक श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के णमोकार महामंत्र एवं श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं पण्डित सुनीलजी देवरी के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

दिनाँक 25 फरवरी को डॉ. भारिल्ल की हीरक जयंती समारोह के अन्तर्गत केलवाडा दि. जैन समाज के अतिरिक्त पीसांगन जैन समाज, पिड़ावा जैन समाज एवं शिवपुरी जैन समाज की ओर से डॉ. भारिल्ल को शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री नवीनजी जैन (जिलाधीश-बारां) द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में किशनगंज के विधायक भी उपस्थित थे।

विधान का आयोजन श्री महावीरजी हेमन्तकुमारजी परिवार द्वारा किया गया। ध्वजारोहणकर्त्ता श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा थे।

इस अवसर पर लगभग 7000/- का सत्साहित्य एवं 3500/- के सी.डी. कैसेट्स घर-घर पहुंचे। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित संदीपजी शास्त्री चैतन्यधाम, पण्डित अंकितजी लूणदा एवं पण्डित एकत्वजी शास्त्री ने संपन्न कराये।

## कवि सम्मेलन हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की हीरक जयंती के अवसर पर दिनाँक 23 मई, 2010 को एक राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन देवलाली (नासिक) में किया जा रहा है।

यह कवि सम्मेलन डॉ. भारिल्ल के जीवन/व्यक्तित्व/कर्तृत्व पर केन्द्रित रहेगा।

कार्यक्रम का संचालन कविराज श्री युगराजजी जैन मुम्बई करेंगे। इसमें कविता पाठ करने के इच्छुक कवि अपनी कविताएँ/प्रविष्टियाँ पण्डित पीयूषजी शास्त्री को श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर के पते पर प्रेषित करें एवं फोन:0141- 2707458, 2705581 पर सम्पर्क करें। **कविता भेजने की अंतिम तिथि 20 अप्रैल है,** इसके बाद प्राप्त कविता पर विचार करना संभव नहीं हो सकेगा। कविता को पठन योग्य समझा जाने पर उन्हें कवि सम्मेलन के लिये आमंत्रित किया जायेगा। **– कांतिभाई मोटानी, मुम्बई**

# टीकमगढ में डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

**टीकमगढ (म.प्र.) :** यहाँ 18 फरवरी को **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** की हीरक जयंती मनाई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. एन.एस.गजभिये (कुलपति-डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय विधायक श्री यादवेन्द्र सिंह बुन्देला तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जे.के. जैन (अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता-वाणिज्य एवं प्रबंध संकाय सागर विश्वविद्यालय) एवं श्री राकेशजी गिरी (अध्यक्ष-नगरपालिका टीकमगढ) मंचासीन थे।

इस अवसर पर मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट टीकमगढ, महरौनी एवं बानपुर के पदाधिकारियों द्वारा तिलक, माल्यार्पण, शॉल, श्रीफल आदि से सम्मान के पश्चात् भारतीय किसान कांग्रेस के नेता श्री देवेन्द्रजी पोद्दार, जैन शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री सुनीलजी घुवारा, महावीर बाल संस्कार के अध्यक्ष श्री बालचंद्रजी मोदी, श्री अशोकजी जैन मास्टर, श्री आलोकजी वैद्य, डॉ. अशोकजी जैन, प्रतिष्ठाचार्य पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, बानपुर के ग्राम प्रधान श्री अखिलेशजी चौधरी, केशवगढ सरपंच प्रतिनिधि श्री पुष्पेन्द्रजी जैन आदि ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का आत्मीय अभिनंदन किया।

स्वागत भाषण के दौरान **प्रतिष्ठाचार्य श्री राजेन्द्रजी जैन** ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। **डॉ. योगेशजी योगेन्द्र अलीगंज** ने डॉ. भारिल्ल को महान शिक्षाविद् बताया। मुख्य अतिथि **क्षेत्रीय विधायक श्री बुन्देला** ने डॉ. भारिल्ल को समूचे बुन्देलखण्ड की शान बताया। अध्यक्षीय उद्बोधन में **प्रो. एन.एस. गजभिये (कुलपति)** ने जैनदर्शन एवं इसके सिद्धांतों को मानव जीवन के लिये कल्याणकारी बताते हुये डॉ. भारिल्ल की तात्त्विक शैली की प्रशंसा की तथा जैनदर्शन में उनके अमिट साहित्यिक योगदान को ऐतिहासिक उदाहरण बताया।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में जैन सिद्धांतों को घर-घर पहुंचाने का संकल्प दोहराया एवं स्वाध्याय पर विशेष व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सुश्री प्रियंका जैन ने, संचालन एम. डी. जैन कॉलेज आगरा के प्रवक्ता श्री आलोकजी जैन ने तथा आभार प्रदर्शन श्री सुरेशचंद्रजी पिपरा ने किया।

## वीतराग-विज्ञान के स्वामित्व का विवरण (फार्म 4 नियम नं. 8)


| | | |
|---|---|---|
| समाचार पत्र का नाम | : | वीतराग-विज्ञान (हिन्दी) |
| प्रकाशन स्थान | : | श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) |
| प्रकाशन अवधि | : | मासिक |
| प्रकाशक एवं मुद्रक | : | ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) द्वारा पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। |
| सम्पादक का नाम | : | डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय)<br>श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.) |
| स्वामित्व | : | पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 |

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

- प्रकाशक : **ब्र. यशपाल जैन**
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

दिनांक : 26-3-2010